أصول العقيدة - الهندية

अक़ीदे की बुनियादी बातें

جمعية الدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي

225

هاتف: ٤٢٢٣٤٤٦٦ ٠١٦ .فاكس: ٤٢٢٣٤٤٧٧ ٠١٦

جمعية الدعوة بالزلفي

أصول العقيدة - هندي

अक़ीदे की बुनियादी बातें

جمعية الدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات في الزلفي
Tel: 966 164234466 - Fax: 966 164234477

أصول العقيدة
أعده وترجمه إلى اللغة الهندية
جمعية الدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالزلفي
الطبعة الثانية : ٨ / ١٤٤٢ هـ

ح المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالزلفي ١٤٣٩ هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالزلفي

أصول العقيدة - الهندية / المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالزلفي الزلفي، ١٤٣٩ هـ

٤٨ ص ؛ ١٢× ١٧ سم.

ردمك: ٤- ٩٨- ٨٠١٣- ٦٠٣ - ٩٧٨

١- العقيدة الإسلامية أ- العنوان

ديوى ٢٤٠ ١٤٣٩/٥٥٤٣

رقم الإيداع: ١٤٣٩/٥٥٤٣

ردمك: ٤ - ٩٨ - ٨٠١٣ - ٦٠٣ - ٩٧٨

अक़ीदा (आस्था) के मूल स्रोत

एकैश्वरवाद (तौहीद) और उसकी क़िस्में

एकैश्वरवाद यह है कि अल्लाह ने जिन चीज़ों को अपने लिए विशेष कर लिया है और इबादत (उपासना) के जिन तरीक़ों को अपने लिए अनिवार्य कर दिया है उनमें हम उसे एक जानें। अल्लाह ने जिन चीज़ों का आदेश दिया है उनमें प्रमुख चीज़ें ये हैं

अल्लाह तआला फ़रमाता है ﴿قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ﴾ यानी, ऐ अल्लाह के रसूल! आप कह दें कि अल्लाह एक है। दूसरी जगह कहा गया है: ﴿وَمَا خَلَقْتُ الجِنَّ وَالإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ﴾ [الذاريات ٥٦] मैने ने इंसानों और जिन्नातों को केवल अपनी इबादत के लिए पैदा किया है (सुरतुज्जारियात 56)

आगे और फ़रमाया: ﴿وَاعْبُدُوا اللهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا﴾ [النساء ٤٧] यानी, अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को साझीदार मत बनाओ (सुरतुन्निसा 36)

एकैश्वरवाद को तीन क़िस्मों में विभाजित किया जा सकता है

1.तौहीदे रबूबियत 2. तौहीदे उलूहियत

3. तौहीदे अस्मा व सिफ़ात

1. तौहीदे रबूबियत

सृष्टि की रचना और उसकी व्यवस्था के मामलों में अल्लाह को एक जानें और अक़ीदा रखें कि अल्लाह ही रोज़ी देने वाला, ज़िन्दा करने वाला और मारने वाला है। उसी के हाथ में आसमानों और ज़मीनों की बादशाहत है:

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللهِ عَلَيْكُمْ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللهِ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَأَنَّى تُؤْفَكُونَ﴾ [فاطر:٣]

यानी, क्या अल्लाह के सिवा और कोई भी रचयता है जो तुम्हें आकाश व पाताल से रोज़ी पहुंचाए? उसके सिवा कोई माबूद पूज्य नहीं। अतः तुम कहां उलटे जाते हो। (सूरह फ़ातिर आयत–3)

अल्लाह तआला एक दूसरी जगह कहता है:

﴿تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ﴾ [الملك ١]

यानी, बहुत बरकत वाला है वह (अल्लाह) जिसके हाथ में बादशाहत है और जो हर चीज़ का सामर्थ्य रखता है। (सूरह अल मुल्क, आयत 1)

अल्लाह की बादशाहत में सृष्टि की प्रत्येक चीज़ शामिल है, और वह उसे जिस तरह से चाहता है, प्रयोग में लाता है

रहा सृष्टि की व्यवस्था के मामले में अल्लाह को एक मानना, तो सृष्टि के संचालन के सिलसिले में अल्लाह का कोई साझेदार नहीं।

[الأعراف:٥٤] أَلَا لَهُ الخَلْقُ وَالأَمْرُ تَبَارَكَ اللهُ رَبُّ العَالَمِينَ यानी, याद रखो अल्लाह ही के लिए ख़ास है पैदा करना, हाकिम होना, बड़ी बरकत वाला है अल्लाह जो तमाम दुनिया का पालनहार है। (सूरह अल आराफ, आयत 54)

एकैष्वरवाद के इस क़िस्म का इन्कार शायद ही कोई व्यक्ति करता है। और जिसने किया है उसने भी ज़ाहिर में तो इन्कार किया है लेकिन उसका दिल इस बात को स्वीकार करता है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है [النمل:١٤ وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا यानी, उन्होंने इन्कार कर दिया जुल्म और घमंड की बुनियाद पर यद्यपि उनके दिल यक़ीन कर चुके थे, (सूरह अल.नमल, आयत–14)

एकैश्वरवाद के इस स्वरुप को स्वीकार कर लेना ही हितकारी नहीं होगा, क्योंकि मुश्रिकों (अल्लाह की जात में किसी और को शरीक करने वालों) का स्वीकार कर लेना उनके हक़ में लाभदायक नहीं हुआ। अल्लाह तआला ने उनके बारे में फ़रमाया

﴿وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالقَمَرَ لَيَقُولُنَّ اللهُ فَأَنَّى يُؤْفَكُونَ﴾ [العنكبوت:٦١]

यानी, यदि आप उनसे पूछें कि ज़मीन और आसमान का रचयता और सूरज और चाँद को काम में लगाने वाला कौन है? तो उनका जवाब यही होगा कि अल्लाह तआला, फ़िर किधर उलटे जा रहे हैं। (सूरह अल.अंकबूत, आयत–61)

2. तौहीदे उलूहियत

हर प्रकार की इबादत केवल अल्लाह के लिए की जाए। इंसान अल्लाह के साथ किसी को ऐसा साझीदार न बना ले कि उसकी इबादत करने लगे, उसकी निकटता चाहने लगे। एकैश्वरवाद का यह स्वरुप बहुत ही महत्वपूर्ण और व्यापक है और इसी वजह से अल्लाह तआला ने सृष्टि की रचना की। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿وَمَا خَلَقْتُ الجِنَّ وَالإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ﴾ [الذاريات:٥٦]

यानी, मैं ने इंसानों और जिन्नातों को केवल और केवल अपनी इबादत के लिए पैदा किया है।(सूरह अज्जारियात 56)

अल्लाह तआला ने नबियों को इसी लिए दुनिया में भेजा था और इसी लिए ग्रन्थों को अवतरित किया था। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ

यानी, तुम से पहले भी जो हमने रसूल भेजे उसकी ओर भी यही वही अवतरित की कि मेरे सिवा कोई माबूदेबरह़क़ नहीं, अतः तुम सब मेरी ही इबादत करो। (सूरह अल अंबिया, आयत–25)

जब रसूलों ने मुशरिकों को एकैश्वरवाद की इस क़िस्म की दावत दी तो उन्होंने इसे मानने से इन्कार कर दिया। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا [الأعراف:٧٠] यानी,

उन्होंने कहा कि क्या आप हमारे पास इस लिए आए हैं कि हम केवल अल्लाह ही की इबादत करें और जिनको हमारे बापदादा पूजते थे उनको छोड़ दें। (सूरह अलआराफ़, आयत–70)

किसी भी तरह की इबादत को अल्लाह के सिवा किसी दूसरे के लिए, किसी फ़रिषते, नबी, वली या अल्लाह के सिवा किसी और मख़्लूक़ की इबादत करना सही नहीं है। क्योंकि इबादत केवल अल्लाह ही के लिए विषेश है।

3. तौहीदे अस्मा व सिफ़ात

अल्लाह ने जिन नामों और विशेषताओं को अपने लिए ख़ास कर रखा है या अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें जिन नामों से पुकारा है उस पर ईमान लाना और बिना किसी हिचकिचाहट और कमी बेशी के उसे इस तरह मानना जो अल्लाह के शायाने शान हो और उन चीज़ों को नकारना जिन चीज़ों को अल्लाह तआला ने अपनी ज़ात से जोड़ने से मना किया है और जिन चीज़ों से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना किया है। और जिन चीज़ों के बारे में कोई आदेश नहीं है उनके सिलसिले में भी ख़ामोशी ज़रूरी है। न उसे साबित किया जाए और न उसे नकारा जाए।

अस्मा–ए हुस्ना यानी अच्छे नामों की मिसालों में से एक मिसाल यह है कि अल्लाह तआला ने अपनी ज़ात को हैय्य्' और क़य्यूम' कहा है तो हमारे लिए यह अनिवार्य है कि हम उस पर ईमान लाएं कि हय्य्' अल्लाह का एक नाम है। और इस नाम में जो विशेषताएं और गुण शामिल हैं उसपर भी ईमान लाना ज़रूरी है। इससे अभिप्रेत मुकम्मल ज़िंदगी है जिससे पहले न तो अदम रहा है और न बाद में, उसे समाप्त हो जाना है।

उसी तरह अल्लाह ने अपनी ज़ात को समीअ' यानी सुनने वाला कहा है तो हमारे लिए यह ज़रूरी है कि हम इस बातपर ईमान रखें कि समीअ अल्लाह के नामों में से एक नाम है और सुनना उसकी विशेषता है।

विशेषताओं के उदाहरणों के सिलसिले में अल्लाह फ़रमाता है:

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللهِ مَغْلُولَةٌ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا بِمَا قَالُوا بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ [المائدة:٦٤]

और यहूदियों ने कहा कि अल्लाह के हाथ बंधे हुए हैं। उन्हीं के हाथ बंधे हुए हैं। और उनके इस कथन के कारण ही उनपर लानत भेजी गयी। बल्कि अल्लाह के दोनों हाथ खुले हुए हैं और वह जिस तरह चाहता है खर्च करता है।(सूरह अलमायदा, आयत 64)

अल्लाह तआला ने अपने लिए दो हाथों को साबित किया है और उनकी विशेषता बताते हुए कहा गया है कि वे दोनों खुले हुए हैं। यानी वह बहुत नवाज़ने वाला है। इस

लिए हम पर वाजिब है कि हम ईमान रखें कि अल्लाह तआला के दो हाथ हैं और दोनों नवाज़िशों और नेमतों के ताल्लुक़ से खुले हुए हैं। लेकिन हम पर यह भी ज़रूरी है कि हम इन दोनों की कैफ़ियत तक पहुंचने के लिए अपने दिल में कल्पना न करें और न अपनी जुबान से अदा करें कि वह हाथ कैसा है और न मखलूक़ की हाथों से इसकी मिसाल दें। क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ﴾ [الشُّورى:١١] यानी, उस जैसी कोई चीज़ नहीं, वह सुनने और देखने वाला है। (सूरह अलशूरा, आयत 11)

एकैश्वरवाद के इस क़िस्म का सारांष यह है कि हम उन नामों और विशेषताओं को अल्लाह के लिए बिना किसी हिचकिचाहट या फेर बदल या कमी–बेशी के साबित करें जिन्हें उसने अपने लिए साबित किया है या जिन्हें उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके लिए साबित किया है। और उसको नकार दें जिसे अल्लाह ने अपने लिए नकारा है या अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके लिए नकारा है

कलिमए तौहीद

कलिमए तौहीद''ला इलाह इल्लल्लाह दीन की बुनियाद है

इसे दीने इस्लाम में अत्यधिक महत्व दिया गया है। यह इस्लाम का पहला रुक्न है। इसी कलिमा पर सारे आमाल की कुबूलियत निर्भर करती है। इसे जुबान से अदा करना,

उसके अर्थों और भावार्थों को समझना और उसी के अनुसार अमल करना ज़रूरी है।

इस कलिमा का सही भावार्थ यह है कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं है। इस कलिमा की मांग है कि हम केवल और केवल अल्लाह ही की इबादत करें और उसके सिवा किसी और की इबादत न करें। इसका भाव यह बताता है कि अल्लाह के सिवा कोई ख़ालिक़ रचयता नहीं है। यह कहना ग़लत है कि अल्लाह के सिवा कोई कुछ शक्ति रखता है या किसी चीज़ को बदल सकता है।

इस कलिमा के दो प्रमुख अंश हैं

1. पहला अंश नकारात्मक है। ''ला इलाहा यानी नहीं है कोई माबूद। इसमें हर चीज़ से उलूहियत यानी ख़ुदाई का इन्कार किया गया है।

2. दूसरा अंष सकारात्मक है। ''इल्लल्लाह मगर अल्लाह। इस अंष में ख़ुदाई के हक़ को केवल अल्लाह के लिए साबित किया गया है, जिसमें उसका कोई भागीदार नहीं है

केवल अल्लाह की ही इबादत की जाए और किसी भी तरह की इबादत अल्लाह के सिवा किसी दूसरे के लिए न की जाए। जिस किसी ने इस कलिमा के भाव को समझा और उसके तक़ाज़ों को पूरा करते हुए अमल करने की कोशिष की यानी शिर्क को नकारा, अल्लाह की वहदानियत का इक़रार किया और इस कलिमा को व्यापक अर्थों में स्वीकार किया वह वास्तविक अर्थों में मुसलमान हो गया। जो व्यक्ति भरोसे और विश्वास के बग़ैर केवल अमल

करेगा, वह मुनाफ़िक़ होगा। और जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक करेगा वह मुशरिक और काफ़िर होगा। यदि वह अपनी जुबान से इस कलिमा को अदा करता हो।

कलिमए तौहीद "लाइलाहा इल्लल्लाह की फ़ज़ीलत

इस कलिमा की अनेक फ़ज़ीलतें और फ़ायदे हैं। उनमें से कुछ फ़ज़ीलतें ये हैं।

1. कलिमए–तौहीद पर यक़ीन करने वाला यानी मुवह्हेदीन में से यदि कोई जहन्नम में जायेगा भी तो इस कलिमे की बरकत से वह जहन्नम से निकाल लिया जायेगा। मुवह्हेदीन हमेशा–हमेश के लिए जहन्नम में नहीं रह सकता। हदीस में आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

يَخْرُجُ مِنَ النَّارِ مَنْ قَالَ لاَ إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَفِي قَلْبِهِ وَزْنُ شَعِيرَةٍ مِنْ خَيْرٍ، وَيَخْرُجُ مِنَ النَّارِ مَنْ قَالَ لاَ إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَفِي قَلْبِهِ وَزْنُ بُرَّةٍ مِنْ خَيْرٍ، وَيَخْرُجُ مِنَ النَّارِ مَنْ قَالَ لاَ إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَفِي قَلْبِهِ وَزْنُ ذَرَّةٍ مِنْ خَيْرٍ

जिस किसी ने "ला इलाहा इल्लल्लाह कहा होगा, और उसके दिल में जौ के बराबर भी भलाई होगी, उसे जहन्नम से निकाला जायेगा। जिसने "लाइलाहा को पढ़ा होगा और उसके दिल में तिन्के के बराबर भी भलाई होगी तो वह जहन्नम से निकाल दिया जाएगा। (मुत्तफ़क़ अलैह)

इंसानों और जिन्नातों की रचना का उद्देष्य यही है। अल्लाह फ़रमाता है: وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ

यानी, मैने इंसानों और जिन्नातों को केवल और केवल इस लिए पैदा किया कि वे मेरी इबादत करें। (सूरह अल ज़ारियात, आयत–56)

कुरआन की इस आयत में अल्लाह को एक जानने के अर्थ में प्रयोग किया गया है।

इसी कलिम–ए–तौहीद के उद्देश्य को पूरा करने के लिए रसूलों को भेजा गया और आसमानी किताबों को अवतरित किया गया। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ﴾ الأنبياء:٢٥

यानी, तुम से पहले भी हमने जो रसूल भेजे उसकी तरफ यही वह्य नाज़िल फ़रमायी कि मेरे सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं। अतः तुम सब मेरी ही इबादत करो। (सूरह अलअंबिया, आयत–25)

4. रसूलों ने अपनी दावत की शुरुआत इसी कलिमे से की। सबसे पहले इसी कलिम–ए–तौहीद की दावत दी। प्रत्येक रसूल ने अपनी अपनी क़ौम से कहा यानी, ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई दूसरा माबूद (पूज्य) नहीं है।

कलिमए तौहीद की शर्तें

कलिमए तौहीद ''लाइलाहा इल्लल्लाह की सात शर्तें हैं। जब सभी शर्तें पूरी होंगी, इंसान उन शर्तों की पाबन्दी

करेगा और उनमें से किसी शर्त की भी खिलाफ़वर्ज़ी नहीं करेगा, उसी स्थिति में इस कलिमा का इक़रार सही होगा। शर्तें ये हैं।

1. **इल्म (ज्ञान)** नकारात्मक और सकारात्मक दोनों अर्थों में और कलिमा पढ़ने के बाद जो आमाल अनिवार्य हो जाते हैं, उन सभों की जानकारी ज़रूरी है। जब एक इंसान को मालूम होगा कि सिर्फ अल्लाह ही माबूद है और उसके सिवा किसी दूसरे की इबादत ग़लत है तो मानो वह इस कलिमे के सही अर्थ को समझ गया। अल्लाह तआला फ़रमाता है: [محمد:١٩] فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ यानी, सो ऐ नबी आप विश्वास कर लें कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। (सूरह मुहम्मद, आयत–19)

हज़रत उस्मान रज़ि बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

مَنْ مَاتَ وَهُوَ يَعْلَمُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، دَخَلَ الْجَنَّةَ जो कोई इस हाल में मरता है कि उसे इस बात का यक़ीन होता है कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, वह जन्नत में दाखिल होगा। (सही मुस्लिम–26)

2. **यक़ीन (विश्वास)** कलिमा को इस यक़ीन के साथ पढ़ा जाए कि उसपर पढ़ने वाले का दिल मुत्मइन हो, उसमें शक व सन्देह न हो, जिन्हें इंसानों और जिनों में मौजूद शैतान ज़ेहनों में डालते रहते हैं। बल्कि इसे इंसान पूरे यक़ीन के साथ उसके सम्पूर्ण भाव के साथ, पढ़े। अल्लाह

फ़रमाता है: إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا [الحجرات:١٥
यानी, मोमिन तो वे हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाएं फिर शक व संदेह में न पड़ें। (सूरह अलहुजरात, आयत–15)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَأَنِّي رَسُولُ اللهِ، لَا يَلْقَى اللهَ بِهِمَا عَبْدٌ غَيْرَ شَاكٍّ فِيهِمَا، إِلَّا دَخَلَ الْجَنَّةَ»

''मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, और में अल्लाह का रसूल हूं। जो कोई ऐसा इंसान अल्लाह से मिलेगा जिसे उन दोनों मामलों में शक नहीं होगा तो अल्लाह तआला उसे जन्नत में दाख़िल करेगा (सही मुस्लिम 27)

2. **कुबूलकरना,** इंसान उस कलिमा के सभी तक़ाज़ों को अपने दिल और ज़ुबान से कुबूल करे। कुरआनी धारणों की तसदीक़ करे और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिन चीज़ों को लाए हैं, उन सभी पर ईमान लाए, उन सभी चीज़ों को स्वीकार करे और उनमें से किसी चीज़ का इन्कार न करे। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ﴾ [البقرة:٢٨٥]

यानी, रसूल ईमान लाये उस चीज़ पर जो उसकी तरफ अल्लाह की ओर से अवतरित हुई और मोमिन भी ईमान लाएं अल्लाह पर, और उसके फ़रिषतों पर, और उसकी किताबों पर, और उसके रसूलों पर और उसके रसूलों में से किसी में विभेद नहीं करते। (सूरह अलबक़रा, आयत 285)

जो लोग शरई आदेशों और हुदूद पर आपत्ति करते हैं, या उनका खंडन करते हैं, ये चीज़ें भी खंडन करने या स्वीकार न करने के समान हैं, जैसा कि कुछ लोग चोरी या बलात्कार की सज़ा पर आपत्ति करते हैं, या एक से अधिक शादी करने, या मीरास आदि के आदेशों पर उन्हें आपत्ति है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ [الأحزاب:٣٦]

यानी, और देखो किसी मोमिन मर्द और औरत को अल्लाह और उसके फैसले के बाद अपनी किसी बात का कोई अख़्तियार बाक़ी नहीं रहता। (सूरह अलअहज़ाब, आयत 36)

4. **स्वीकार करना** इंसान ''लाइलाहा इल्लल्लाह को उसके व्यापक अर्थों में स्वीकार करे। मानने और व्यापक अर्थों में

स्वीकार करने के बीच यह अन्तर है कि केवल ज़ुबान से इक़रार करने को मानना कहते हैं जबकि उसे व्यवहार में लाना व्यापक अर्थों में स्वीकार करना कहलाता है।

यदि कोई व्यक्ति ''लाइलाहा इल्लल्लाह का अर्थ एवं भाव समझ लेता है, उसपर विश्वास कर लेता है और उसे कुबूल भी कर लेता है लेकिन उसे दिल से नहीं मानता और उसके तक़ाज़ों को पूरा नहीं करता तो समझ लो कि उसने व्यापक अर्थों में स्वीकार नहीं किया। अल्लाह तआला फ़रमाता है: وَأَنِيبُوا إِلَى رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا لَهُ [الزُّمر:٥٤]

यानी तुम सब अपने पालनहार के सामने झुक जाओ और उसके आदेश का पालन किये जाओ। (सूरह अलज़ुम्र, आयत 54)

एक दूसरी जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है:

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا﴾ [النساء:٦٥]

यानी, क़सम है तेरे पालनहार की! वे मोमिन नहीं हो सकते, जब तक कि अपने तमाम विरोध भासों में आपको हाकिम न मान लें, जो फ़ैसला आप उनमें कर दें उनसे अपने दिल में किसी तरह की तंगी और नाखुशी न पाएं और फ़रमाबरदारी के साथ कुबूल कर लें। (सूरह अलनिसा, आयत 65)

5 सच्चाई इंसान को अपने ईमान और अक़ीदे के मामले में सच्चा होना चाहिए। अल्लाह तआला फ़रमाता है

﴿يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ﴾ [التوبة:١١٩]

यानी, ऐ ईमान लाने वालो! अल्लाह तआला से डरो और सच्चे लोगों के साथ रहो। (सूरह अलतौबा, आयत 119)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

जिसने सच्चे दिल से इस बात की गवाही दी कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, वह जन्नत में दाख़िल होगा। इसे इमाम अहमद ने रिवायत किया है और शैख़ अलबानी ने इसे सही क़रार दिया है। यदि इंसान ने ज़ुबानी तौर पर गवाही दी, लेकिन उसके तक़ाज़ों से इन्कार कर दिया तो यह चीज़ उसे छुटकारा नहीं दिला सकेगी बल्कि उसकी वजह से वह मुनाफ़िक़ों में गिना जाएगा

सच्चाई से इन्कार यह भी है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई हुई चीज़ों को झुठलाया जाए। या उनकी लाई हुई कुछ चीज़ों को झुठलाया जाए। अल्लाह तआला ने हमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैरवी करने और आपकी तसदीक़ करने का आदेश दिया है और उसे अपनी पैरवी कहा है। अल्लाह फ़रमाता हैः قُلْ أَطِيعُوا اللهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ[النور:٥٤

यानी, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप कह दीजिए कि अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो। (सूरह अलनूर, आयत 54)

6. **इख़्लास** नेक नीयती के साथ इंसान का अपने अमल को शिर्क से पाक रखने को इख़्लास कहते हैं। इसकी

कैफ़ियत यह है कि वह अपनी समस्त कथनी और करनी ख़ालिस अल्लाह की खुशनूदी हासिल करने के लिए करें। उसमें दिखावा, नुमाइश, लाभ, व्यक्तिगत उद्देश्य और ज़ाहिरी या गुप्त शहवत न हो या किसी व्यक्ति, धर्म या अल्लाह की अवतरित की हुई दलीलों के बिना जमाअत की मुहब्बत में उस अमल को कर रहा हो। ज़रूरी है कि इंसान अपने दावती काम के ज़रिया अल्लाह की खुशनूदी और आखिरत की कामयाबी को नज़र के सामने रखे। उसका दिल किसी मख़लूक़ से पूरी तरह या किसी रूप से शुक्रिया की उम्मीद न रखे।

अल्लाह तआला फ़रमाता है **أَلَا لِلهِ الدِّينُ الخَالِصُ** [الزُّمر:٣]

यानी, ''ख़बरदार! अल्लाह तआला ही के लिए ख़ालिस इबादत करना है (सूरह अलज़ुम्र, आयत 3)

एक दूसरी जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है

وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاءَ [البيِّنة:٥]

यानी, ''उन्हें उसके सिवा कोई आदेश नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें, उसी के लिए दीन को ख़ालिस रखें (सूरह अलबैयना, आयत 5)

सहीहैन में इतबान की हदीस में आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

فَإِنَّ اللهَّ قَدْ حَرَّمَ عَلَى النَّارِ مَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلَّا اللهُّ، يَبْتَغِي بِذَلِكَ وَجْهَ اللهَّ

अल्लाह ने उस व्यक्ति पर जहन्नम की आग को हराम कर दिया है जो अल्लाह की खुशनूदी के लिए ला इलाह इल्लल्लाह पढ़ता हो (मुत्तफ़क़ अलैह)

7. **मुहब्बत** इस कलिमा से, कलिमा के भाव से, और उसके तक़ाज़ों से मुहब्बत होनी चाहिए। इंसान को चाहिए कि वह अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करे और मुहब्बत की शर्तों और उसके तक़ाज़ों को पूरा करे। अल्लाह की मुहब्बत के साथ सम्मान, भय, और आशा के पहलू को हमेशा सामने रखे। इसके अलावा अल्लाह जिन जगहों को पसंद करता है जैसे मक्का, मदीना, और मस्जिदों या जिन समयों को पसंद करता है जैसे रमज़ान, ज़िल हिज्जा के आरंभिक दस दिन आदि, या जिन लोगों से लगाव रखता है जैसे नबियों, रसूलों, फ़रिष्तों, सिद्दीकीनं, शहीदों और नेक लोगों और जिन कामों को प्रिय समझता है जैसे नमाज़, ज़कात, रोज़ा, हज आदि और जिन कथनों को चाहता है जैसे ज़िक्र व अज़कार और कुरआन की तिलावत आदि, उन सभी चीज़ों से भी मुहब्बत करे

यह मुहब्बत ही है कि अल्लाह की पसंदीदा चीज़ों को अपने नफ़्स की प्रिय चीज़ों, कामनाओं, इच्छाओं से बढ़ कर समझे और जिन चीजों को नापसंद करता है जैसे कुफ्र, फ़िस्क़ और गुनाह आदि को अप्रिय समझा जाए। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى الْكَافِرِينَ يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ [المائدة:٥٤]

यानी, ‘‘ए ईमान वालो! तुम में से जो व्यक्ति अपने दीन से फिर जाए तो अल्लाह तआला बहुत जल्द ऐसी क़ौम को लाएगा जो अल्लाह को महबूब होगी और वह भी अल्लाह से मुहब्बत रखती होगी और नर्म दिल होंगे मुसलमानों पर और सख़्त व कठोर होंगे काफ़िरों पर, अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह नहीं करेंगे (सूरह अलमायदा, आयत 54)

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह का अर्थ

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह का मतलब यह है कि ज़ाहिरी और बातिनी हर तरह से यह मान लिया जाए कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बन्दे और तमाम लोगों के रसूल हैं और उसी के अनुसार अमल किया जाए यानी आपके आदेशों का पालन किया जाए, आपकी बतायी हुई चीज़ों की तसदीक़ की जाए, जिन.जिन चीज़ों से रोका है, मना किया है, उनसे बाज़ रहा जाए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इबादत के जो तरीक़े बताये हैं, उन्हीं के ज़रिया अल्लाह की इबादत की जाए।

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह’की गवाही देने के दो मतलब हैं

पहला मतलब यह है कि आप अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। इससे आप की हैसियत सुनिश्चित हो जाती है

कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। इन दोनों विषेशताओं में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मख़्लूकों में सबसे कामिल और पूर्ण इंसान हैं। यहां अब्द' से अभिप्राय इबादतगुज़ार बन्दा है यानी आप इंसान हैं और उसी चीज़ से पैदा हुए हैं जिससे इंसानों की रचना की गयी है। और अन्य इंसानों को जिन परिस्थितियों से गुज़रना पड़ता है, उनसे आप को भी दोचार होना पड़ता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ [الكهف:١١٠] यानी ''ऐ नबी! आप कह दीजिए कि मैं तुम लोगों की तरह ही एक इंसान हूं। (सूरह अलकहफ़, आयत 110)

यानी ''ऐ नबी! आप कह दीजिए कि मैं तुम लोगों की तरह ही एक इंसान हूं। (सूरह अलकहफ़, आयत 110)

और कहा गया है:

الحَمْدُ للهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ﴾ [الكهف:١]

यानी, ''तमाम तारीफ़ें उसी अल्लाह के लिए हैं जिसने अपने बन्दे पर किताब उतारी और उसमें किसी तरह की टेढ़ नहीं है। (सूरह अलकहफ़, आयत 1)

रसूल उस व्यक्ति को कहते हैं जिसे लोगों की ओर अल्लाह की दावत के साथ खुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा गया है। इन दोनों विषेशताओं की गवाही देने की स्थिति में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम की हैसियत सुनिष्चित हो जाती है और उसमें बढ़ाने घटाने की संभावना समाप्त हो जाती है।

बहुत से ऐसे लोग हैं जो अपने आपको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मती बताते हैं, लेकिन आपके बारे में बढ़ा चढ़ा कर बोलते हैं और आपकी शान में गुलू से काम लेते हैं। यहां तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बन्दे के दर्जे से उठाकर अल्लाह के साथ इबादत के दर्जे तक पहुंचा देते हैं।

अतएव अल्लाह को छोड़ कर आप से मदद मांगते हैं। और आपसे ऐसी ज़रूरतों को पूरा करने और मुसीबतों से छुटकारे के लिए सवाल करते हैं जिसका सामर्थ्य केवल अल्लाह को है। दूसरी ओर कुछ दूसरे लोग आपकी रिसालत का इन्कार करते हैं, आपकी पैरवी में कमी करते हैं और वाजिब अधिकारों में कोताही बरतते हैं, आपकी सुन्नतों पर जुल्म करते हैं और उससे बचने की कोशिश करते हैं और ऐसे कथनों पर भरोसा करते हैं जो आपकी लायी हुई शरीयत के खिलाफ़ हुआ करते हैं।

ईमान और उसके अरकान

ईमान कथनी, करनी और अक़ीदे का मिलाजुला स्वरूप है। यह नेकियों की वजह से बढ़ता है और गुनाहों और बुराइयों की वजह से कम होता है। ईमान दिल और जुबान के कथन और दिल जुबान और शरीर के अंगों के आमाल को कहते हैं।

दिल की कथनी का मतलब है कि उस पर अक़ीदा रखा जाए और उसकी तसदीक़ की जाए और ज़ुबान की कथनी का मतलब है कि उसका इक़रार किया जाए।

दिल के अमल का मतलब यह है कि उसको स्वीकार किया जाए। उसके ताल्लुक़ से इख़्लास हो, उससे मुहब्बत की भावना हो और नेक कामों को करने का इरादा हो।

और अच्छे अमल से अभिप्रेत मामूरात की अदाएगी और बुरे कामों से बचना है।

किताब और सुन्नत के मुताबिक़ ईमान की कुछ बुनियादें हैं जो ये हैं अल्लाह पर इमान, आसमानी किताबों पर इमान, रसूलों पर इमान, आख़िरत के दिन पर और तक़दीर (भाग्य) के अच्छे–बुरे होने पर ईमान रखा जाए। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है:

﴿آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ﴾ [البقرة:٢٨٥]

यानी ''रसूल ईमान लाये उस चीज़ पर जो उनकी तरफ़ अल्लाह तआला की ओर से उतरी और मोमिन भी ईमान लाए। ये सब अल्लाह तआला पर और उसके फ़रिषतों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर ईमान लाए। उसके रसूलों में से किसी में हम विभेद नहीं करते। उन्होंने कह दिया कि हमने सुना और पैरवी की। हम तेरी

बख़्शिश चाहते हैं ऐ हमारे रब! और हमें तेरी ही तरफ़ लौटना है (सूरह अल–बक़रा, आयत 285)

इसी तरह सही मुस्लिम में अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ईमान के बारे में पूछा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

أَنْ تُؤْمِنَ بِاللهِ، وَمَلَائِكَتِهِ، وَكُتُبِهِ، وَرُسُلِهِ، وَالْيَوْمِ الْآخِرِ، وَتُؤْمِنَ بِالْقَدَرِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ

ईमान यह है कि आप अल्लाह पर, उसके फ़रिषतों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, आख़िरत के दिन पर और तक़दीर के अच्छे और बुरे होने पर ईमान रखें (सही मुस्लिम 8)

यही 6 बातें सही अक़ीदे की बुनियादें हैं जो क़ुरआन करीम में मौजूद हैं और जिन्हें देकर रसूलों को भेजा गया। इन्हीं बातों को ईमान का अरकान कहा जाता है।

1–अल्लाह पर ईमान

अल्लाह की उलूहियत, रबूबियत, उसके नाम और विशेषताओं में वहदानियत पर ईमान रखा जाए। अल्लाह पर ईमान में ये चीज़ें शामिल हैंः

इस बात पर ईमान लाया जाए कि अल्लाह ही माबूद है और सही अर्थों में इबादत का मुस्तहिक़ है। उसके सिवा कोई इन चीज़ों का मुस्तहिक़ नहीं है। इसका कारण यह है कि अल्लाह ही बन्दों का ख़ालिक़ (रचयता) है। वही

उसके साथ एहसान का मामला करता है। उन्हें रोज़ी देता है। उसके खुले और छुपे भेदों को जानता है। वही नेक बन्दों को सवाब और गुनहगारों को सज़ा देने का सामर्थ्य रखता है।

इसकी वास्तविकता यह है कि इबादत की क़िस्मों में, जिन के ज़रिया अल्लाह की इबादत की जाती है, पूरे सम्मान और ख़ाकसारी के साथ उम्मीद लगाते हुए और डरते हुए केवल अल्लाह के लिए इबादत की जाए। इबादत करते समय अल्लाह के लिए मुहब्बत का जज़बा हो और उसकी महानता दिल में बैठी हो। कुरआन करीम में कई जगह इसका उल्लेख किया गया है। अल्लाह तआला फरमाता है:

فَاعْبُدِ اللهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ﴿ أَلَا لِلهِ الدِّينُ الخَالِصُ [الزُّمر٣:٢]

''अतः आप अल्लाह ही की इबादत करें, उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। ख़बरदार! अल्लाह तआला ही के लिए ख़ालिस इबादत करना है (सूरह अल–ज़ुम्र, आयत 2.3)

وَقَضَى رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ [الإسراء:٢٣]

यानी, ''अल्लाह ने फ़ैसला किया है कि सिर्फ़ उसी की इबादत करो (सूरह अल–इसरा, आयत 23)

فَادْعُوا اللهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الكَافِرُونَ﴾ [غافر:١٤]

यानी, ''तुम अल्लाह को पुकारते रहो, उसके लिए दीन को ख़ालिस करके चाहे काफ़िर बुरा मानें (सूरह अलग़ाफ़िर, आयत 14)

इबादत की बहुत सी क़िस्में हैं जिन में दुआ, खौफ़ व रज़ा, तवक्कुल, लालच, भय, अनाबत, इस्तआनत, पनाह चाहना, फ़रियाद करना, क़ुर्बानी करना, नज्र व नियाज़ करना आदि शामिल हैं। इन इबादतों को अल्लाह के सिवा किसी दूसरे के लिए अंजाम देना जायज़ नहीं है। और अल्लाह के सिवा किसी दूसरे के लिए अंजाम देना कुफ्र व शिर्क है

दुआ की दलील कुरआन मजीद की वह आयत है जिसमें अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ﴾ [غافر:٦٠]

यानी, ''और तुम्हारे रब का फ़रमान है कि मुझ से दुआ मांगो मैं तुम्हारी दुआ कुबूल करुंगा। विश्वास करो जो लोग मेरी इबादत से खुदसरी करते हैं वे ज़लील होकर जहन्नम में पहुंच जायेंगे। (सूरह अल ग़ाफिर, आयत 60)

नोमान बिन बशीर रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: **الدُّعَاءُ هُوَ العِبَادَةُ** ''दुआ इबादत है। (सुनन तिर्मिज़ी 2969)

भय की दलील यह है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है:

فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ﴾ [آل عمران:١٧٥]

यानी ''तुम लोग उनसे भयभीत न हो, यदि तुम मोमिन हो

तो मुझसे ख़ौफ़ खाओ। (सूरह आलेइमरान, आयत 125)

रजा के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

فمن كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا﴾ الكهف:١١٠

यानी ''तो जिसे भी अपने पालनहार से मिलने की इच्छा हो उसे चाहिए कि नेकी के काम करे और अपने पालनहार की इबादत में किसी को भी शरीक न करे। (सूरह अलकहफ़, आयत 110)

तवक्कुल के सिलसिले में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَعَلَى اللهِ فَتَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ﴾ [المائدة:٢٣]

यानी ''अगर तुम लोग मोमिन हो तो केवल अल्लाह ही पर तवक्कुल और भरोसा किया करो (सूरह अलमायदा, आयत 23)

अल्लाह तआला दूसरी जगह फ़रमाता है

وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ فَهُوَ حَسْبُهُ [الطَّلاق:٣]

यानी ''जो कोई अल्लाह पर भरोसा करेगा, अल्लाह उसके लिए काफ़ी होगा। (सूरह अत–तलाक़, आयत 3)

लालच, डर, और ख़ाकसारी के सिलसिले में अल्लाह का फरमान है:

إِنَّهُمْ كَانُوا يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَرَهَبًا وَكَانُوا لَنَا خَاشِعِينَ﴾ [الأنبياء:٩٠]

यानी ‘‘वह बुजुर्ग लोग नेक कामों की तरफ जल्दी करते थे और हमें लालच और डर व खौफ़ से पुकारते थे। और हमारे सामने आजिज़ी करने वाले थे। (सूरह अलअंबिया, आयत 90)

ख़शीअत की दलील अल्लाह तआला का वह फ़रमान है जिसमें अल्लाह तआला फ़रमाता है[البقرة:١٥٠]فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي

यानी उनसे न डरो, बल्कि मुझसे डरो (सूरह अलबक़रा, आयत 150

अनाबत के सिलसिले में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَأَنِيبُوا إِلَى رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا لَهُ [الزُّمر:٥٤]

यानी ‘‘तुम सब अपने रब की तरफ़ झुक पड़ो और उसकी इबादत किये जाओ। (सूरह अलजुम्र, आयत 54)

इस्तेआनत की दलील में अल्लाह तआला का यह फ़रमान है: إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ﴾ [الفاتحة:٥]

यानी, ‘‘हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं। (सूरह अलफ़ातिहा, आयत 5)

इस सिलसिले में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का भी फ़रमान है: وَإِذَا اسْتَعَنْتَ فَاسْتَعِنْ بِاللَّهِ

यानी ‘‘जब तुम मदद मांगो, अल्लाह से मांगो। (सुनन तिर्मिज़ी 2516)

पनाह मांगने के सिलसिले में अल्लाह तआला फ़रमाता है

﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾ [الناس:١]

यानी ''ऐ नबी! आप कह दीजिए कि मैं लोगों के रब की पनाह मे आता हूं। (सूरह अलअन्नास, आयत 1)

फ़रियाद चाहने की दलील कुरआन करीम की यह आयत है।

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُم[الأنفال:٩]

यानी ''उस वक़्त को याद करो जबकि तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे, फिर अल्लाह ने तुम्हारी सुन ली। (सूरह अलअंफ़ाल, आयत 9)

ज़िब्ह की दलील में वह फ़रमाने इलाही है जिसमें कहा गया है

﴿قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلهِ رَبِّ العَالَمِينَ﴾ [الأنعام:١٦٢]

यानी ''आप फ़रमा दीजिए कि निष्चित रूप से मेरी नमाज़ और मेरी सारी इबादत और मेरा जीना और मेरा मरना, यह सब ख़ालिस अल्लाह ही के लिए है जो सारे जहान का मालिक है। (सूरह अल–अंनआम, आयत 163)

सही हदीस में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः यानी ''अल्लाह ने ऐसे व्यक्ति पर लानत भेजी है जो अल्लाह के अलावा दूसरे किसी के नाम पर ज़िब्ह करता है (सही मुस्लिम 1978)

नज़्र व नियाज़ के सिलसिले में अल्लाह फ़रमाता हैः

يُوفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا﴾ [الإنسان:٧]

यानी ''जो नज़्र पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई चारों ओर फैल जाने वाली है। (सूरह अलइंसान, आयत 7)

यही मामला आदतों का है कि यदि उसके ज़रीया हमारा मक़सद अल्लाह की इताअत पर मज़बूती का हुसूल हो जैसे सोना, खाना पीना, रोज़ी का हासिल करना, और शरई विवाह आदि, तो ये आदतें नेक नीयती की वजह से इबादत हो जाती हैं और उन पर मुसलमान को सवाब से नवाज़ा जाता है।

ख. अल्लाह पर ईमान लाने में यह भी शामिल है कि उसने इस्लाम के जिन पांच ज़ाहिरी अरकान को अपने बन्दों के लिए वाजिब या फ़र्ज क़रार दिया है, उन सभी पर ईमान लाएं

इस्लाम के अरकान ये हैं

कलिमाए शहादत, ''लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही देना, नमाज़ क़ायम करना, ज़कात अदा करना, रमज़ान के महीने के रोज़े रखना और जिसके पास सामर्थ्य हो, उसका बैतुल्लाह का हज करना। और इसके अलावा अन्य फर्जों पर ईमान रखना, जिन्हें शरीअत ने वाजिब क़रार दिया है।

ग. अल्लाह पर ईमान में यह भी शामिल है कि हम इस बात पर ईमान रखें कि अल्लाह तआला पूरी कायनात का खालिक़ और इंसानों के मामलात का वास्तविक मुदब्बिर है

और अपने ज्ञान और सामर्थ्य के साथ जिस तरह चाहता है, अपने प्रयोग में लाता है।

वही दुनिया और आख़िरत का मालिक है और दोनों जहान का पालनहार है। उसके सिवा कोई ख़ालिक़ नहीं है और न ही उसके सिवा कोई पालनहार है। उसी ने रसूलों को भेजा और लोगों की इस्लाह और ऐसी चीज़ों की तरफ दावत देने के लिए, जिनमें निजात और दीन व दुनिया की भलाई है, आसमानी किताबों को नाज़िल किया और उन चीज़ों में उसका कोई शरीक नहीं है अल्लाह फ़रमाता है:

﴿اللهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ﴾ [الزُّمر:٦٢]

यानी, ''अल्लाह हर चीज को पैदा करने वाला है और वही हर चीज़ का रखवाला है। (सूरह अलजुम्र, आयत 62)

घ. अल्लाह पर ईमान में यह भी शामिल है कि हम कुरआन करीम में आयी हुई और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित अल्लाह के अस्माए हुस्ना (अच्छे नामों) और विशेषताओं पर बिना किसी हिचकिचाहट के ईमान लाएं जिनपर अल्लाह के नाम और उनकी विशेषता दलील के तौर पर पेश की जाती है।

क्योंकि अल्लाह तआला की विशेषताओं का उनके शायाने शान संबोधित करें और उन गुणों में किसी को उसके समान न क़रार दें। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ﴾ [الشُّورى:١١]

यानी ''और उसके समान कोई और चीज़ नहीं है और वह सुनने और देखने वाला है।(सूरे शूरा 11)

2. फ़रिशतों पर ईमान

फ़रिशतों पर ईमान तफ़सीली भी होगा और इजमाली भी।

इजमाली ईमान यह है कि अल्लाह ने फ़रिशतों को पैदा किया है और अपनी पैरवी का पाबन्द बनाया है। उनकी बेशुमार किस्में हैं। कुछ फ़रिशते आसमान उठाने पर लगे हुए हैं। कुछ जन्नत के तो कुछ जहन्नुम के दारोग़ा हैं और कुछ बन्दों के कर्मों का लेखा जोखा तैयार करने में लगे हैं

तफ़सीली ईमान से अभिप्राय यह है कि हम उन फ़रिशतों पर ईमान लाएं। अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिन फ़रिशतों के नाम बताये हैं जैसे जिब्रील, मीकाईल, जहन्नुम के दारोग़ा मालिक, और सूर फूंकने वाले इसराफ़ील अलैहिस्सलाम

अल्लाह तआला ने फरिशतों को नूर से पैदा किया है। उम्मुल मोमेनीन हज़रत आईशा रज़ि से साबित है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

«خُلِقَتِ الْمَلَائِكَةُ مِنْ نُورٍ، وَخُلِقَ الْجَانُّ مِنْ مَارِجٍ مِنْ نَارٍ، وَخُلِقَ آدَمُ مِمَّا وُصِفَ لَكُمْ»

फ़रिशतों को नूर से पैदा किया गया है और जिनों को आग की लपट से और आदम को उस चीज़ से जिसे तुमको बयान किया गया है (सही मुस्लिम 2996)

3. आसमानी किताबों पर ईमान

यह ईमान लाना ज़रूरी है कि अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को हक़ से अवगत कराने और उसकी तरफ़ दावत देने के लिए अनेक नबियों और रसूलों पर आसमानी किताबें उतारीं और हम उन सारी किताबों पर ईमान लाते हैं। अल्लाह कि जिन किताबों का नाम बयान किया गया है, जैसे तौरात, इंजील, ज़बूर और कुरआन पाक, जो कि आखिरी आसमानी किताब है और दूसरी आसमानी किताबों की तसदीक़ करने वाली हैं।

उम्मत पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित हदीसों के साथ उसी किताब की पैरवी करना है और उसके आदेशों को मानना है। इसी वजह से अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुरआन मजीद देकर इंसान और जिन्नात दोनों मखलूक़ात की तरफ़ भेजा है ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके बीच फैसला कर सकें। उसे दिल की बीमारियों के लिए शिफा पाने का सामान, हर चीज़ की वज़ाहत का ज़रिया और दुनिया वालों के लिए हिदायत व रहमत बनाया है। अल्लाह तआला फरमाता है

﴿وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ﴾ [الأنعام:١٥٥]

यानी ''और यह एक किताब है जिसको हमने बड़ी ख़ैर व बरकत वाली बनाकर भेजा, अतः तुम उसकी पैरवी करो और डरो कि तुम पर रहम हो। (सूरह अलअनआम, आयत 155)

अल्लाह तआला कुरआन पाक में दूसरी जगह फरमाता हैः

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الكِتَابَ تِبْيَانًا لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَى لِلْمُسْلِمِينَ﴾ [النحل:٨٩]

यानी ''और हमने तुम पर यह किताब नाज़िल फरमायी है जिसमें हर चीज़ का संतोषजनक बयान है और हिदायत, और रहमत और ख़ुशख़बरी है मुसलमानों के लिए। (सुरह नहल आएत 89)

4. रसूलों पर ईमान

रसूलों पर इजमाली और तफ़सीली दोनों तौर पर ईमान लाना ज़रूरी है। हम इस बात पर ईमान रखें कि अल्लाह ने अपने बन्दों की ओर अनेक रसूलों को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला, डराने वाला, और हक़ की ओर दावत देने वाला बनाकर भेजा। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ [النحل:٣٦]

यानी ''हमने हर उम्मत में रसूल भेजे कि केवल अल्लाह की इबादत करो और उसके सिवा तमाम माबूदों से बचो। (सूरह अलनह्ल, आयत 36)

जिसने उन रसूलों की दावत को स्वीकार किया, उसने सफलता और सलामती पायी और जिसने उनका विरोध किया, उसकी क़िस्मत में नाकामी और नामुरादी है।

हम इस बात पर भी ईमान रखते हैं कि सारे नबियों और रसूलों की दावत एक ही है। और वह दावत है कि

अल्लाह को एक जाना जाए और केवल उसी की इबादत की जाए। अलबत्ता रसूलों की शरीअतें और आदेश अलग अलग थे।

हम इस बात पर भी ईमान रखते हैं कि अल्लाह ने कुछ रसूलों को कुछ रसूलों पर फ़ज़ीलत बख़्शी है। और रसूलों में सबसे अफ़ज़ल और श्रेष्ठ सबसे आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जैसा कि अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया है:

وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّينَ عَلَى بَعْضٍ وَآتَيْنَا دَاوُودَ زَبُورًا [الإسراء:٥٥]

यानी ''हमने कुछ नबियों को कुछ पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) प्रदान की है। (सूरह अल इसरा, आयत 55)

दूसरी जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है:

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَسُولَ اللهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ [الأحزاب:٤٠]

यानी ''लोगो! तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नहीं लेकिन आप अल्लाह के रसूल हैं और ख़ातिमुन्नबीयीन हैं। यानी नुबूवत उन्हीं पर ख़त्म हो जाती है। (सुरह अहजाब 40)

अल्लाह ने जिन रसूलों के नाम का उल्लेख किया है या जिन रसूलों के नाम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित हैं हम उन तमाम रसूलों पर तफ़सीली और विशेष रुप से ईमान लाते हैं, जैसे नूह, हूद, सालेह, इबराहीम, अलैहिमुस्सलाम अजमईन।

5. आख़िरत के दिन पर ईमान

इस ईमान में वे सभी चीज़ें दाख़िल हैं जिनके बारे में अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया है कि वे मृत्यु के बाद घटित होंगे, जैसे क़ब्र का अज़ाब, और उसकी नेमतें और उसी तरह क़ियामत के दिन जिन सख़्तियों एवं कठिनाइयों से जूझना पड़ेगा, पुल सेरात, मीज़ान, हिसाब किताब, सहीफ़ों का प्रसार और लोगों के बीच उसका उड़ना जिसे कुछ लोग अपने दाहिने हाथ से पकड़ेंगे तो कुछ लोग बायें हाथ से। और इसमें यह भी शामिल है कि हम रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिलने वाले हौज़ पर ईमान लाएं और यह मानें कि तमाम नबियों का हौज़ होगा जैसा कि सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पता चलता है।

उसी तरह उसमें जन्नत व जहन्नम, मोमिनों को अल्लाह का दीदार और अल्लाह तआला से बातचीत आदि पर ईमान लाना भी शामिल है जिनका उल्लेख कुरआन करीम और सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में किया गया है। अतएव उन सभी चीज़ों पर उस तरीक़े से ईमान लाना और उनकी तसदीक़ करना ज़रूरी है जैसा कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है।

6. क़ज़ा व क़द्र पर ईमान

इस संबंध में चार चीज़ों पर ईमानलाना ज़रूरी है।

क. इस कायनात में जो कुछ हो रहा है या जो कुछ होने वाला है, उन सभों का ज्ञान अल्लाह को है। और बन्दों की

परिस्थितियों, उनकी रोज़ी रोटी, उनकी मौत आदि समस्त मामलों का ज्ञान उसे है। और उससे कुछ भी छुपा नहीं है अल्लाह खुद फ़रमाता है: [التوبة:١١٥] ﴿إِنَّ اللهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ﴾

यानी, ''अल्लाह तआला हर चीज़ को जानने वाला है (सूरह अलतौबा, आयत 115)

ख. अल्लाह ने जिन चीज़ों का फैसला किया है, उसे लिख लिया गया है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُبِينٍ﴾ [يس:١٢]

यानी, ''और हमने हर चीज़ को एक वाज़ेह किताब में ज़ब्त कर रखा है। (सूरह यासीन, आयत 12)

ग. अल्लाह की मर्ज़ी पर ईमान लाएं। यानी अल्लाह जो चाहेगा वह होगा और जो नहीं चाहेगा वह नहीं होगा। जैसा कि अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है:

﴿قَالَ كَذَلِكَ اللهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ﴾ [آل عمران:٤٠]

यानी, ''उसी तरह से अल्लाह जो चाहता है, करता है (सूरह आलेइमरान, आयत 40)

घ. अल्लाह ने उन चीज़ों को उनके अस्तित्व में लाने से पहले पैदा किया है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿وَاللهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ﴾ [الصَّفات:٩٦]

यानी, ''यद्यपि तुम्हें और तुम्हारी बनायी हुई चीज़ों को अल्लाह ही ने पैदा किया है।'' (सूरे साफफात–96)

शिर्क और उसकी क़िस्में

शिर्क यह है कि कोई इंसान अल्लाह की रबूबियत, उलूहियत और उसके नामों व गुणों में किसी को उसके बराबरी का समझे।

शिर्क की दो क़िस्में है एक बड़ा शिर्क और एक छोटा शिर्क।

शिर्के अकबर यानी बड़ा शिर्क

अल्लाह को छोड़कर किसी ग़ैर की इबादत करना। शिर्क की इस क़िस्म को करने वाला इंसान यदि बिना तौबा किये हुए मर जाता है तो वह हमेशा–हमेश के लिए जहन्नमी रहेगा। शिर्क की यह क़िस्म सारे नेक आमाल को बर्बाद कर देती है। अल्लाह तआला ने कुरआन में एक जगह फरमाया है:

﴿وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ﴾ [الأنعام:٨٨]

यानी, ''यदि यह मान लिया जाए कि ये लोग इस तरह का बड़ा शिर्क करते हैं, तो जो कुछ ये आमाल करते थे, वे सब बेकार हो जाते। (सूरह अलअनआम, आयत 88)

शिर्के अकबर को अल्लाह तआला बिना सच्ची तौबा किये कभी माफ़ नहीं करता। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

إِنَّ اللهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللهِ فَقَدِ افْتَرَى إِثْمًا عَظِيمًا ﴾ [النساء:٤٨]

यानी, ''निष्चित ही अल्लाह तआला अपने साथ शिर्क किये जाने को नहीं बख़्शता और उसके सिवा जिसे चाहता है बख़्श देता है और जो अल्लाह के साथ शरीक बनाये उसने बहुत बड़ा गुनाह और बोहतान बांधा। (सूरे निसा–48)

शिर्के अकबर की क़िस्मों में गैरूल्लाह को पुकारना, गैरूल्लाह के लिए नज़्रो नियाज़ करना, गैरूल्लाह के लिए जिब्ह करना आदि। या इंसान अल्लाह को शरीक ठहराकर उनसे ऐसी मुहब्बत करे जैसी अल्लाह से मुहब्बत होनी चाहिए। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللهِ أَنْدَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِلهِ [البقرة:١٦٥]

यानी, ''कुछ लोग ऐसे भी हैं जो औरों को अल्लाह का शरीक ठहराकर उनसे ऐसी मुहब्बत रखते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह से होनी चाहिए। (सूरह अलबक़रा, आयत 165)

शिर्के असग़र यानी छोटा शिर्क

ये उन कर्मों को कहते हैं जिनको किताब व सुन्नत में शिर्क कहा गया है। लेकिन ये बड़े शिर्क नहीं कहलाते। शिर्क की यह क़िस्म इंसान को दीन से ख़ारिज नहीं करती। अलबत्ता तौहीद' में कमी करती है। जैसे थोड़ा

बहुत दिखावा या यह कहना कि यदि अल्लाह और आप जो चाहें। या यह कहना कि यदि अल्लाह और आप न होते, यह अक़ीदा रखे बग़ैर कि अल्लाह के सिवा किसी दूसरे की क़सम खाना कि अल्लाह के सिवा जिस की क़सम खा रहे हैं, वह अल्लाह के सिवा किसी भी तरह का नफ़ा नुक़्सान नही पहुंचाता है।

या जो अल्लाह ने और अमुक व्यक्ति ने चाहा, आदि कहना। इस वजह से कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हैः

''मैं तुम लोगों के सिलसिले में सबसे ज़्यादा छोटे शिर्क से डरता हूं।

आपसे इसके बारे में पूछा गया तो आपने फ़रमाया कि वह दिखावा है। इसे इमाम अहमद ने जैय्यिद सनद से रिवायत किया है।

इसी तरह से रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान हैः مَنْ حَلَفَ بِغَيْرِ اللهِّ فَقَدْ أَشْرَكَ जिस किसी ने अल्लाह के सिवा किसी दूसरे के लिए क़सम खायी, उसने शिर्क किया। (सुनन अबू दाऊद 2829)

तावीज़ बांधना और छल्लों को लटकाना, बीमारियों या मुसीबतों को दूर करने या उससे बचने के उद्देश्य से या धागा पहनना, जैसे आमाल शिर्क के उस क़िस्म में आते हैं। यदि कोई इंसान यह अक़ीदा रखता है कि ये चीज़ें अपनी ज़ात से नफ़ा या नुक्सान पहुचाती हैं, तो ऐसी स्थिति में यह बड़ा शिर्क हो जाता है।

नाजिया' समुदाय का अक़ीदा

नाजिया' समुदाय का अक़ीदा वही है जो अहले सुन्नत वल जमाअत का अक़ीदा है कि सच्चा मोमिन इस बात की गवाही देता है कि अल्लाह ही पालनहार और माबूद बरहक़ है और हर कमाल में मुनफ़रिद है। वह केवल अल्लाह ही की इबादत करता है, उसके दीन को ख़ालिस करते हुए और इस बात पर विश्वास रखता है कि अल्लाह ही पैदा करने वाला, नवाज़ने वाला, रोकने वाला और सभी मामलों की व्यवस्था करने वाला है।

वह इस बात को भी स्वीकार करता है कि अल्लाह ही माबूद बरहक़ है वही पहला है उससे पहले कोई चीज़ नहीं है और वह आख़िर है, उसके बाद कोई चीज़ नहीं है वह ग़ालिब है, उसके ऊपर कोई चीज़ नहीं है और वह बातिन है और उससे कोई चीज छुपी नहीं है

अल्लाह हर दृष्टि से बहुत बड़ा और अत्यधिक महान है। ज़ात की दृष्टि से, मान सम्मान की दृष्टि से, ताक़त और शक्ति की दृष्टि से।

अल्लाह आसमान पर इस तरह से छाया हुआ है जो उसके शायाने शान है। और उसे सब पर वर्चस्व प्राप्त है। उसका इल्म ज़ाहिर और बातिन, आसमानी दूनिया और जमीनी दूनिया सभी पर छाया हुआ है। वह अपने इल्म की वजह से बन्दों के साथ है। वह बन्दों के हालात को जानता है। वह निहायत ही क़रीब है और दुआओं को कुबूल करता है

अल्लाह तआला अपनी ज़ात में तमाम मख़्लूक़ात से ग़नी है और तमाम लोग अपने जन्म और अपनी ज़रूरतों के लिए हर वक़्त अल्लाह तआला के मुहताज हैं। पलक झपकने के बराबर भी कोई इससे बेज़ार नहीं है। अल्लाह तआला बहुत ही मेहरबान और रहम करने वाला है। बन्दों को दीनी और दुनयावी जोभी नेमतें हासिल हैं, वे सभी अल्लाह की तरफ़ से ही हैं। अल्लाह नेमतों से नवाज़ने वाला और मुसीबतों कोदूर करने वाला है।

अल्लाह की रहमत का हाल यह है कि अल्लाह हर रात को जब रात का एक तिहाई भाग बचा रहता है तो आसमान से आवाज़ लगाता है कौन है जो मुझसे सवाल करे और मैं उसे दूं? वह कहता रहता है यहां तक कि फ़ज्र का वक़्त हो जाता है। अल्लाह ऐसेही देता है जो उसकी शायाने शान है।

अल्लाह हकीम है। शरीअत और तक़दीर में गहरी हिकमत छुपी है। अल्लाह ने किसी भी चीज़ को बेकार नहीं बनाया। और शरई आदेशों को मस्लिहत की प्राप्ति और फ़साद से बचने का ज़रिया बनाया।

अल्लाह तआला दुआओं को कुबूल करने, दरगुज़र से काम लेने और गुनाहों को बख़्शने वाला है। बन्दों की तौबा को कुबूल करता है, गुनाहों को माफ़ करता है और दरगुज़र से काम लेता है। वह तौबा करने वालों और बख़्शिश मांगने वालों का बड़े से बड़ा गुनाह भी माफ़ कर देता है।

अल्लाह शकूर है वह कम अमल करने वालों को भी क़द्र की निगाह से देखता है और उस पर बहुत ज़्यादा सवाब

देता है। और शुक्रिया अदा करने वालों को अपने फ़ज्ल से बहुत ज्यादा नवाज़ता है

सच्चा मोमिन अल्लाह को उन व्यक्तिगत और विषिष्ट गुणों से याद करता है जिन से अल्लाह ने खूद को सूषोभित किया है। या उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे सम्बोधित किया है। जैसे कामिल ज़िन्दगी, वह देखता है और सुनता है। वह महान और श्रेष्ठ है। सुन्दर और सर्वगुण सम्पन्न है।

एक सच्चा मोमिन किताब और सुन्नत में आई हुई इस बात पर ईमान रखता है कि मोमिन अपनी आंखों से जन्नत में अपने रब का दीदार (दर्शन) करेंगे। और अल्लाह तआला को देखना और रब की खुशनूदी हासिल करना सबसे बड़ी नेमत और जन्नत की सबसे बड़ी लज़्ज़त है।

जो व्यक्ति ईमान के बगैर मरेगा वह हमेशा–हमेश के लिए जहन्नम में रहेगा। और मोमिनों में बड़ा गुनाह करने वाले यद्यपि जहन्नम में जायेंगे मगर वे हमेशा के लिए जहन्नम में नहीं रहेंगे। बल्कि जिसके दिल में राई के दाना के बराबर भी ईमान होगा, वह जहन्नम की आग से निकलेगा।

ईमान दिलों के अक़ीदे और उसकी कथनी और करनी के मिले जुले स्वरूप का नाम है। जिसने सच्चे तौर पर इसे अदा किया वही सच्चा मोमिन है। और ऐसा इंसान सवाब का हक़दार होगा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबियों में सबसे आख़िरी नबी हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इंसानों और जिनों में से हर एक की ओर ख़ूशख़बरी देने वाला और डराने वाला, अल्लाह की अनुमति से उसकी ओर बुलाने वाला और रौशन चिराग़ बनाकर भेजा गया।

अल्लाह ने आप को दीन व दुनिया की इस्लाह के लिए भेजा ताकि समस्त प्राणी केवल अल्लाह की इबादत करें और उसके साथ किसी को भागीदार न बनायें और अपना रिज़्क़ उसी से चाहें। एक सच्चा और पक्का मोमिन इस बात का अक़ीदा रखता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समस्त प्राणियों में सर्वाधिक जानकार, सबसे सच्चे, सबसे अधिक उपदेश देने वाले और सारी चीज़ों की व्याख्या करने वाले हैं।

अतएव वह आप का सम्मान करता है और आपसे मुहब्बत रखता है और आपकी मुहब्बत को समस्त प्राणियों पर मुक़द्दम रखता है। और आपके दीन के उसूल और उसके प्रचार प्रसार की पाबन्दी करता है। और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कथनी और करनी को तमाम लोगों की कथनी और करनी पर मुक़द्दम रखता है।

एक पक्का मोमिन इस बात का एतिक़ाद रखता है कि अल्लाह ने उन्हें ऐसे गुणों एवं विशेषताओं से नवाज़ा है जिन से किसी दूसरे इंसान को नहीं नवाज़ा है। अतएव मुक़ाम और मर्तबा के लिहाज़ से समस्त प्राणियों में सबसे बुलन्द मर्तबा है और नैतिक दृष्टि से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सबसे कामिल हैं। आप ने अपनी उम्मत

के लिए भलाई की सभी राहों को बता दिया और हर तरह की बुराइयों से उम्मत को डरा दिया।

एक पक्का मोमिन अल्लाह की अवतरित की हुई तमाम किताबों और उसके भेजे हुए तमाम रसूलों पर जिन्हें जानता है या नहीं जानता, सभी पर ईमान रखता है और ईमान के मामले में उनमें से किसी के बीच विभेद नहीं करता है। और इस बात पर भी ईमान रखता है कि सभी रसूलों का संदेश एक है कि केवल अल्लाह की इबादत की जाए और उसके साथ किसी को साझीदार न बनाया जाए।

एक मुसलमान हर तरह की तक़दीर पर यक़ीन रखता है और इस बात पर विश्वास करता है कि बन्दे के सभी कर्म अच्छे हों या बुरे अल्लाह के इल्म में हैं। वे सभी लिखे जा चुके हैं। उन में अल्लाह की हिकमत शामिल है।

अल्लाह ने बन्दों को ऐसा सामर्थ्य और ऐसी इच्छा शक्ति प्रदान की है जिससे यह आमाल अंजाम पाते हैं। उन्हें इन में से किसी पर मजबूर नहीं किया है बल्कि उन्हें आज़ाद बनाया है। अलबत्ता अपने अदलो इंसाफ की वजह से मोमिनों की नज़रों में ईमान को महबूब (प्रिय) बनाया है और उससे उनके दिलों को आरास्ता (सुशोभित) किया है। और उनकी निगाहों में कुफ़्र और फिस्को फुजूर को मकरूह क़रार दिया है।

ईमान के उसूल में यह भी शामिल है कि मोमिन अल्लाह, उसकी किताब, उसके रसूलों, मुसलमानों के इमामों और आम मुसलमानों के प्रति नसीहत की भावना रखता हो।

वह भलाइयों का हुक्म देता हो, बुराइयों से रोकता हो, मां,बाप के साथ अच्छा सुलूक करता हो, रिशता नाता जोड़ने, रिशतेदारों, पड़ोसियों, और जिनके हुक़ूक़ आयद होते हैं के साथ एहसानमन्दी जैसी चीज़ों का ख़्याल रखता हो, और तमाम मख़लूक़ों के साथ बेहतर मामला करता हो। वह उम्दा और बेहतर अखलाक़ की दावत देता हो और बुरे और घटिया आदतों से रोकता हो।

उसका अक़ीदा हो कि ईमान व यक़ीन की दृष्टि से कामिलतरीन मोमिन वह है जिसके आमाल (कर्म) और अख़लाक़ सबसे बेहतर हों। जो बात–चीत में सबसे ज़्यादा सच्चा हो, जो हर अच्छाई और भलाई से क़रीब और बुराइयों से दूर हो।

उसे मालूम हो कि जिहाद क़ियामत के दिन तक जारी रहेगा। यह दीन का सबसे ऊंचा मर्तबा है। इसमें जिहाद की सभी क़िस्मों, इल्मो हुज्जत के ज़रिया जिहाद हो, या हथियार के ज़रिया, सभी शामिल हैं। हर मुसलमान के लिए यह ज़रूरी है कि वह हर संभव तरीक़े से दीन की रक्षा करे। और जब जिहाद की शर्तें और वजह पाये जाएं तो वह उस मक़सद के लिए नेक इमाम के साथ खड़ा रहे

इसी तरह से ईमान की बुनियादों में यह भी है कि एक मुसलमान कलिमा के इत्तिहाद को बढ़ावा दे, उसका एहतिमाम करे और उसका लालची भी हो। मुसलमानों के दिलों को करीब करने, और उन्हें जोड़ने के ताल्लुक से भरपूर कोशिश करे। गुटबाज़ी, आपसी दुशमनी, और हसद और जलन से डराये।

इसी तरह इत्तिहाद की वजह बनने वाले सभी कामों को अपनाए। इसके अलावा वह लोगों की जानों, मालों, इज़्ज़तों और लोगों को हर तरह की परेशानियों से बचने की कोशिश करे। इसी तरह मुसलमानों और काफ़िरों के साथ तमाम मामलों में अदलो इंसाफ़ करने का आदेश दे।

और इस बात पर भी ईमान हो कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मत में सबसे श्रेष्ठ हैं। और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्यारे साथी, विषेश कर खुलफ़ा–ए–राशिदीन, अशरा मुबश्शरा बिल जन्नह, अहले बद्र, बैअते रिज़वान में शरीक होने वाले सहाबी, मुहाजिर व अंसार में शुरु शुरु में इस्लाम कुबूल करने वाले लोग भी उम्मत में श्रेष्ठतम हैं। अतएव एक इंसान सहाबियों से मुहब्बत करता है और उसी को अल्लाह का दीन समझता है। उनके ख़ूबियों की बखान करता है। और उनकी ओर यदि कोई बुराई मंसूब की जाए तो वह खामोश रहता है।

अच्छे आलिमों और हुक्मरानों में इंसाफ़ पसंद इमामों व दूसरे लोग जिन्हें दीन में ऊंचा मुक़ाम हासिल है उन सभी का एहतिराम करता है, और अल्लाह से दुआ करता है कि वह उन्हें शक व सन्देह, शिर्क, नफ़ाक़ और बुरे अखलाक़ से बचाए और दीने इस्लाम पर बाक़ी रखे।

यही वे उसूल हैं जिन पर फिरक़ा नाजिया के पैरवी करने वाले (अनुयायी) ईमान रखते हैं और उन्हीं चीज़ों की दावत भी देते हैं।